जल उपलब्ध एवं गुणवत्ताः वर्तमान एवं भविष्य की चिन्ताएं

पुनीत कुमार

मानव अपनी सुख–सुविधाओं में वृद्धि, आय और जीवन स्तर में वृद्धि हेतु उत्पादन में वृद्धि की होड़ में पृथ्वी के सतही तथा भूगर्भीय जल स्रोतों के अविवेकपूर्ण दोहन से सारे विश्व को 'जल संकट' की ओर धकेल रहा है। दूसरी ओर जल–मल की निकासी और निस्तारण की यथोचित व्यवस्था न होने से स्वच्छता एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना विश्व के सभी देशों की सरकारों, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, संयुक्त राष्ट विकास कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम आदि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है इसीलिए इसे सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों (डक्ळे) में शामिल किया गया है।

किसी सतही जल स्रोत एवं भूगर्भीय जल स्रोत की गुणवत्ता प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों ही प्रकार के प्रभावों का सम्मिलित अथवा अलग–अलग फलक है। मानवीय प्रभावों के बिना भी केवल प्राकृतिक कारकों से भी किसी जल स्रोत की गुणवत्ता प्रतिकूल ढंग से प्रभावित हो सकती है ऐसे प्राकृतिक कारण हो सकते हैं। जल संकट आसन्न है कतिपय विचारकों का तो यहाँ तक कहना है कि तृतीय विश्व युद्ध यदि हुआ तो वह जल स्रोतों पर अधिकार करने के लिए होगा। जल संकट का सामना करने की कार्यनीति त्रिआयामी होनी चाहिए। जिसमें जल का किफायत के साथ उपभोग, जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाकर जल का गुणवत्ता बहाली तथा जलापूर्ति न्यायोचित और समतामूलक होने पर केन्द्रित हो।